द्वितीयक समूह की विशेषताएँ (Characteristics of secondary Group)

द्वितीयक समूह व्यक्तियों का एक ऐसा बड़ा संगठन है जिसमें अवैयक्तिक संबंध, सीमित सहयोग, मैं की भावना, व्यक्तियों के बीच संघर्ष व व्यक्तिगत स्वार्थों की प्रधानता होती है। द्वितीयक समूह की विशेषताएँ निम्नलिखित है ! —

① बड़ा आकार (Large size) :-
द्वितीयक समूह का आकार प्रायः बड़ा होता है। इसके सदस्यों की संख्या हजारों, लाखों व करोड़ों में होती है। उदाहरणस्वरूप राजनीतिक दल, राज्य, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ, विभिन्न संघ आदि की ओर ध्यान दिया जाए तो स्पष्ट होता है कि इसका आकार काफी बड़ा होता है।

② अप्रत्यक्ष संबंध (Indirect Relation) :-
द्वितीयक समूह में अप्रत्यक्ष संबंध पाए जाते हैं। इसमें भौतिक समीपता नहीं रहती है। फलस्वरूप इनमें व्यक्तियों के बीच अप्रत्यक्ष संबंध बनते हैं। ये संबंध संचार के साधनों — डाक, पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन के माध्यम से स्थापित होते हैं। जैसे — राजनीतिक दलों के व्यक्तियों के बीच अधिकांशतः अप्रत्यक्ष संबंध होते हैं।

③ औपचारिक संबंध (formal Relation) :-
द्वितीयक समूह में औपचारिक संबंध पाए जाते हैं। इनके सदस्यों के बीच आत्मीयता व अपनापन नहीं होता। उनके बीच संबंध सिर्फ काम का होता है और परस्पर परिचय भी उतना ही रहता है जितना समूह के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक होता है। जैसे — राजनीतिक दल के बीच पाये जाने वाले संबंध औपचारिक ही हैं।

classmate
Date
Page

(4) अवैयक्तिक संबंध (Impersonal Relation):-
द्वितीयक समूह में अवैयक्तिक संबंध पाये जाते हैं। इनमें सदस्यों की संख्या इतनी अधिक होती है कि वे एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्तिगत संबंध का प्रश्न ही नहीं उठता। जिन कुछ को हम जानते हैं, उनमें बहुतों से हमारा संबंध शिष्टाचार तक ही सीमित होता है।

(5) उद्देश्यों की भिन्नता (No Identity of Ends):-
द्वितीयक समूह में उद्देश्यों की भिन्नता पायी जाती है। ऐसे समूहों में अप्रत्यक्ष औपचारिक व अवैयक्तिक संबंध पाये जाते हैं। हर एक सिर्फ अपने बारे में सोचते हैं अपने हितों की पूर्ती में लगे रहते हैं, व दूसरों के सुख-दुख का अहसास नहीं होता। फलस्वरूप व्यक्तियों के उद्देश्यों की भिन्नता बनी रहती है।

(6) मैं की भावना (I feeling):-
द्वितीयक समूह में मैं की भावना की अधिकता होती है। इसके सदस्यों में घनिष्ठता व अपनापन का अभाव पाया जाता है। हर एक अपने ही बारे में सोचते होते हैं। फलस्वरूप सभी सदस्य अपने हितों की अधिकतम पूर्ती हेतु आपस में प्रतिस्पर्धा करते रहते हैं। ऐसे समूहों में व्यक्तिगत स्वार्थ ही प्रधान बन जाते हैं। अतः द्वितीयक समूह में 'मैं की भावना' प्रबल होती है।

(7) अप्रत्यक्ष सहयोग (Indirect Co-operation):-
द्वितीयक समूह के सदस्यों में अप्रत्यक्ष सहयोग पाया जाता है। सभी सदस्य अपने निर्धारित कार्यों को करते हैं ताकि समूह का उद्देश्य पूरा हो। यानि ऐसे समूहों में व्यक्ति

समूह हेतु कार्य करते हैं, ऐसे सहयोग को अप्रत्यक्ष सहयोग कहा जाता है।

(8) जानबूझकर स्थापना (Deliberate Establishment):—
द्वितीयक समूह का निर्माण जान बूझकर किया जाता है। ऐसे समूह विशेष उद्देश्यों की पूर्ती के लिए बनाये जाते हैं। अतः जब हमारा कोई विशेष उद्देश्य की पूर्ति करना होता है तब जानबूझकर इस समूहों की स्थापना करते हैं। समाज में जितने भी द्वितीयक समूह हैं जैसे— राजनीतिक दल, विभिन्न संघ, व्यापारिक प्रतिष्ठान आदि-आदि हैं, उनकी स्थापना जान बूझकर की जाती है।

(9) सीमित उत्तरदायित्व (Limited Responsibility):—
द्वितीयक समूहों में व्यक्तियों का उत्तरदायित्व काफी सीमित होता है। इसके दो मुख्य कारण हैं — (1) इन समूहों में घनिष्ठ संबंध का अभाव होता है, और, (2) एक निश्चित नियमों के अन्तर्गत ही समूह के सदस्यों के बीच संबंध होते हैं। अतः इन समूहों में व्यक्ति का उत्तरदायित्व उतना ही होता है जितना नियम के अनुसार निर्धारित होते हैं। उसके बाहर न तो वे जा सकते हैं और न ही जाने की इच्छा होती है।

(10) परिवर्तनशील (Changeable):—
द्वितीयक समूह परिवर्तनशील होता है। इन समूहों की स्थापना व्यक्तियों की आवश्यकता के अनुसार होता है। जब व्यक्तियों की आवश्यकताएँ बदलती हैं तो इन समूहों का रूप भी बदलता है। इसलिए इसे अपेक्षाकृत अस्थायी समूह भी कहा जाता है।